राजस्थान–सरकार

प्रतिवेदन संख्या–104 (केवल कार्यालय उपयोग हेतु)

वर्ष 2005–06 में आयोजित
एक दिवसीय महिला कृषक प्रशिक्षण
एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण
दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण
पर
विशेष अध्ययन सर्वेक्षण प्रतिवेदन

अगस्त, 2007

प्रबोधन एवं मूल्यांकन शाखा
कृषि निदेशालय, पंत कृषि भवन,
राजस्थान, जयपुर

प्राक्कथन

प्रबोधन एवं मूल्यांकन शाखा द्वारा जारी होने वाले प्रतिवेदनों की संख्या में यह 104 वां प्रतिवेदन है। वर्ष 2005–06 में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में से एक दिवसीय महिला प्रशिक्षण कार्यक्रम, एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम पर प्रबोधन एवं मूल्यांकन शाखा द्वारा विशेष अध्ययन सम्पादित किया गया।

कृषकों की तकनीकी ज्ञानवृद्धि हेतु प्रशिक्षण एक सशक्त माध्यम है। अर्जित ज्ञान को अधिक से अधिक अपनाकर कृषकों के उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित की जा सके। अध्ययन में प्रशिक्षण कार्यक्रम का क्रियान्वयन, प्रशिक्षणार्थियों की राय एवं सुझाव पर अध्ययन केन्द्रित रहा है।

मै आशा करता हूं कि अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों एवं सुझाव भविष्य में जिला अधिकारियों/उप जिला अधिकारियों को, आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने में उपयोगी सिद्व होगे ।

(मनोज शर्मा)
आयुक्त कृषि
राजस्थान, जयपुर

अगस्त, 2007

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	सर्वेक्षण के प्रमुख निष्कर्ष	1—3
2	प्रस्तावना	4—5
3	प्रथम अध्याय—एक दिवसीय महिला कृषक प्रशिक्षण	6—12
4.	द्वितीय अध्याय—एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण	13—20
5.	तृतीय अध्याय—दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण	21—28
6.	परिशिष्ठ	
(1)	जिलेवार एवं प्रशिक्षणवार लक्ष्य एवं प्राप्ति	29
(2)	जिलेवार—एक दिवसीय महिला कृषक प्रशिक्षणवार लक्ष्य एवं प्राप्ति	30
(3)	जिलेवार एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण लक्ष्य एवं प्राप्ति	31
(4)	जिलेवार दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण लक्ष्य एवं प्राप्ति	32

वर्ष 2005–06 में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम पर आयोजित विशेष अध्ययन सर्वेक्षण से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न प्रकार रहेः–

1. एक दिवसीय महिला प्रशिक्षण कार्यक्रम :–

- राज्य में कुल 211 महिला प्रशिक्षण आयोजित किये गये जो कि लक्ष्य का 106 प्रतिशत रहा ।
- सर्वेक्षण हेतु 48 प्रतिशत प्रशिक्षणों का चयन कर 288 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया, जिसमें से 280 प्रशिक्षणार्थियों का सर्वेक्षण कार्य किया गया।
- 33 प्रतिशत महिलाऐं अन्य पिछडा वर्ग से सम्बन्धित थी ।
- 79 प्रतिशत चयनित प्रशिक्षणार्थी लधु एवं सीमान्त कृषकवर्ग की थी ।
- 83 प्रतिशत महिला प्रशिक्षणार्थी साक्षर पाई गई ।
- 21 प्रतिशत प्रशिक्षण सरकारी संस्थानों पर दिये गये ।
- 12 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी ऐसी पाई गई जो पूर्व में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी थी।
- 42 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण की जानकारी एक दिवस पूर्व ही दी गयी। औसतन प्रत्येक प्रशिक्षण में 2 – 3 अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे ।
- महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारी/कर्मचारी की भागीदारी सर्वाधिक 38 प्रतिशत रही ।
- 69 प्रतिशत प्रशिक्षण कृषि पर्यवेक्षक/सहायक कृषि अधिकारियों द्वारा सम्पादित किये गये ।
- प्रशिक्षणार्थियों में साहित्य का वितरण 90 प्रतिशत किया जाना पाया गया ।
- 82 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया गया तथा प्रशिक्षण ज्ञान सामुहिक था ।

2. एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम :–

- राज्य में कुल 269 कृषक प्रशिक्षण आयोजित किये गये जो कि लक्ष्य का 102 प्रतिशत रहा ।

- सर्वेक्षण हेतु 58 प्रतिशत प्रशिक्षणों का चयन कर 348 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया, जिसमें से 343 प्रशिक्षणार्थियों का सर्वेक्षण कार्य किया गया।

- 35 प्रतिशत कृषक अन्य पिछडा वर्ग से सम्बन्धित थी ।

- 69 प्रतिशत चयनित प्रशिक्षणार्थी लधु एवं सीमान्त कृषकवर्ग की थी ।

- 90 प्रतिशत कृषक प्रशिक्षणार्थी साक्षर पाये गये ।

- 22 प्रतिशत प्रशिक्षण सरकारी संस्थानों पर दिये गये ।

- 17 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी ऐसी पाये गये जो पूर्व में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे।

- 28 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण की जानकारी एक दिवस पूर्व ही दी गयी।

- औसतन प्रत्येक प्रशिक्षण में 2 – 3 अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे ।

- प्रशिक्षण में सर्वाधिक भागीदारी 34 प्रतिशत पशुपालन विभाग की रही ।

- 74 प्रतिशत प्रशिक्षण कृषि पर्यवेक्षक/सहायक कृषि अधिकारियों द्वारा सम्पादित किये गये ।
- प्रशिक्षणार्थियों में साहित्य का वितरण 89 प्रतिशत किया जाना पाया गया ।

- 74 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया गया तथा प्रशिक्षण ज्ञान सामुहिक था ।

3. दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम :–

- राज्य में कुल 586 कृषक प्रशिक्षण आयोजित किये गये जो कि लक्ष्य का 79 प्रतिशत रहा ।
- सर्वेक्षण हेतु 115 प्रतिशत प्रशिक्षणों का चयन कर 690 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया, जिसमें से 665 प्रशिक्षणार्थियों का सर्वेक्षण कार्य किया गया।
- 34 प्रतिशत कृषक अन्य पिछडा वर्ग से सम्बन्धित थी ।
- 65 प्रतिशत चयनित प्रशिक्षणार्थी लधु एवं सीमान्त कृषकवर्ग की थी ।
- 91 प्रतिशत कृषक प्रशिक्षणार्थी साक्षर पाये गये ।
- 44 प्रतिशत प्रशिक्षण सरकारी संस्थानों पर दिये गये ।
- 28 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी ऐसी पाये गये जो पूर्व में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे।
- 30 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण की जानकारी एक दिवस पूर्व ही दी गयी। औसतन प्रत्येक प्रशिक्षण में 1 – 2 अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे ।
- प्रशिक्षण में सर्वाधिक भागीदारी 34 प्रतिशत पशुपालन विभाग की रही ।
- 58 प्रतिशत प्रशिक्षण कृषि पर्यवेक्षक/सहायक कृषि अधिकारियों द्वारा सम्पादित किये गये ।
- प्रशिक्षणार्थियों में साहित्य का वितरण 95 प्रतिशत किया जाना पाया गया ।
- 80 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया गया तथा प्रशिक्षण ज्ञान सामुहिक था ।

वर्ष 2005–06 में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम पर विशेष अध्ययन

1 प्रस्तावना :–

कृषकों की तकनीकी ज्ञान वृद्धि हेतु प्रशिक्षण एक सशक्त माध्यम है । गुणवत्ता, उद्देश्य परक व प्रभावी प्रशिक्षणों के माध्यम से कृषकों के उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है ।

वर्ष 2005–06 में विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत विभाग द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिनमें से विशेष अध्ययन हेतु एक दिवसीय महिला प्रशिक्षण, एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण एवं दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का अध्ययन हेतु चयन किया गया । प्रशिक्षणवार लक्ष्य के विरूद्व प्राप्ति वर्ष 2005–06 में निम्नानुसार रही :–

क्र.स.	प्रशिक्षण का नाम	लक्ष्य	प्राप्ति	प्रतिशत प्राप्ति
1	2	3	4	5
1	एक दिवसीय महिला कृषक प्रशिक्षण	200	211	106
2	एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण	264	269	102
3	दो दिवसीय संस्थागत कृषक प्रशिक्षण	737	586	79

जिलेवार एवं प्रशिक्षणवार लक्ष्य के विरूद्व प्राप्ति परिशिष्ठ 1 पर उपलब्ध है ।

2. **प्रशिक्षण कार्यक्रम पर विशेष अध्ययन** :– वर्ष 2005–06 में प्रशिक्षण कार्यक्रम के भौतिक व वित्तीय लक्ष्य निर्धारित कर विस्तृत दिशा निर्देश सहित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने हेतु सभी उप निदेशक कृषि (विस्तार), सहायक निदेशक कृषि को प्रशिक्षण आयोजित करने हेतु निर्देश दिये गये थे । प्रशिक्षणों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने हेतु विभाग की प्रबाधेन एवं मूल्यांकन शाखा द्वारा विशेष अध्ययन किया गया ।

3. विशेष अध्ययन का मुख्य उद्देश्य

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम क्रियान्वयन का प्रभाव

2.कार्यक्रम क्रियान्वयन से लाभान्वित कृषकों की राय

3.कार्यक्रम क्रियान्वयन के बारे में सुझाव

4.कार्यक्रम क्रियान्वयन में कठिनाई

4. सर्वेक्षण हेतु प्रशिक्षणों की संख्या प्रत्येक चरण में उनके जिलें में आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों के आधार पर निम्न प्रकार निर्धारित की गयी :–

क.सं.	नाम प्रशिक्षण	आयोजित प्रशिक्षणों की संख्या	चयनित प्रशिक्षण संख्या
1	एक दिवसीय महिला कृषक प्रशिक्षण	1 से 4 तक	1
		4 से अधिक	2
2	एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण	1 से 4 तक	1
		4 से अधिक	2
3	दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण	1 स 5 तक	1
		6 से 10 तक	2

प्रत्येक चयनित प्रशिक्षण में 6 प्रशिक्षणार्थियों का चयन रेण्डम आधार पर कर विशेष अध्ययन किया गया । सर्वेक्षण दो चरणों में सम्पादित कराया गया, प्रथम चरण खरीफ 2005 एवं द्वितीय चरण रबी 2005–06 में आयोजित प्रशिक्षण के आधार पर सम्पादित किया गया ।

5. सर्वेक्षण उन्हीं उप जिलों में किया गया यहां पर कृषि अन्वेषक कार्यरत थे ।

6. जोधपुर, बाडमेर, जैसलमेर, हनुमानगढ, बीकानेर, एवं चूरू जिलें में विशेष अध्ययन आयोजित नहीं किये गये है ।

प्रथम अध्यायः— एक दिवसीय महिला प्रशिक्षण

वर्ष 2005—06 में एक दिवसीय महिला प्रशिक्षण के लक्ष्य की प्राप्ति 200 के विरूद्व 211 रही जो कुल लक्ष्य का 106 प्रतिशत रही । सर्वेक्षण हेतु 48 प्रशिक्षण का चयन कर । कुल 288 लाभार्थी का सर्वेक्षण हेतु चयन किया गया, जिनमें से 280 लाभार्थी महिला कृषक प्रशिक्षणों पर विशेष अध्ययन किया गया जो लक्ष्य का 97 प्रतिशत रहा । जिलेवार महिला प्रशिक्षण के लक्ष्य एवं प्राप्ति परिशिष्ठ 2 पर उपलब्ध है ।

(1) महिला कृषकों की श्रेणी :—

महिला कृषकों की श्रेणी सर्वेक्षण के आधार पर निम्नानुसार है :—

क.स.	खण्ड का नाम	सेम्पल साइज	महिला कृषक श्रेणी		
			सीमान्त	लघु	अन्य
1	2	3	4	5	6
1	जयपुर	54	22	18	14
2	भरतपुर	34	20	5	9
3	जोधपुर	54	18	27	9
4	उदयपुर	42	21	18	3
5	भीलवाडा	30	24	3	3
6	कोटा	54	22	18	14
7	श्रीगंगानगर	12	3	1	8
	योग	**280**	**130**	**90**	**60**

महिला प्रशिक्षण कार्यक्रम में लाभान्वित 47 प्रतिशत महिला लधु, 32 प्रतिशत सीमान्त एवं 21 प्रतिशत अन्य महिला कृषक की सहभागिता रही । सर्वेक्षण आंकडों से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षण देने मे चयन हेतु लधु व सीमान्त कृषकों पर अधिक ध्यान दिया गया।

(2) कृषक वर्ग :—

सर्वेक्षण द्वारा यह ज्ञात किया गया कि जिन कृषकों को प्रशिक्षण दिया गया है उनका जाति आधारित वर्गीकरण क्या है । सर्वेक्षण के आधार पर खण्डवार स्थिति निम्नानुसार रही :—

क.सं.	खण्ड का नाम	सेम्पल साइज	सामान्य	ओबीसी	अनु. जाति	अ.ज. जा.
1	2	3	4	5	6	7
1	जयपुर	54	8	35	8	3
2	भरतपुर	34	9	11	14	0
3	जोधपुर	54	11	21	17	5
4	उदयपुर	42	0	0	0	42
5	भीलवाडा	30	18	3	9	0
6	कोटा	54	7	20	16	11
7	श्रीगंगानगर	12	4	3	5	0
	योग	**280**	**57**	**93**	**69**	**61**

सर्वेक्षण में चयनित लाभान्वितों में से सर्वाधिक संख्या अन्य पिछडा वर्ग के 33 प्रतिशत कृषकों की रही इसका कारण प्रमुखतया यह है कि अन्य पिछडा वर्ग की सभी जातियों का प्रमुख पेशा कृषि ही रहा है । अनूसूचित जाति के चयनित लाभान्वित कृषकों का प्रतिशत 25 रहा, अनूसूचित जन जाति का 22 प्रतिशत रहा एवं सामान्य वर्ग के केवल 20 प्रतिशत कृषक ही लाभान्वित हुए।

(3) शैक्षणिक स्तर :– सर्वेक्षण द्वारा लाभान्वित कृषकों के शैक्षणिक स्तर का भी अध्ययन किया गया । प्राप्त आंकडों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :–

क.सं.	खण्ड का नाम	सेम्पल साईज	निरक्षर	माध्यमिक तक शिक्षित	स्नातक या अधिक
1	2	3	4	5	6
1	जयपुर	54	21	32	1
2	भरतपुर	34	5	28	1
3	जोधपुर	54	17	37	0
4	उदयपुर	42	14	28	0
5	भीलवाडा	30	0	23	12
6	कोटा	54	8	38	10
7	श्रीगंगानगर	12	4	7	1
	योग	280	76	201	3

सर्वेक्षण परिणामों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 27 प्रतिशत लाभान्वित महिला कृषक निरक्षर थी, जबकि मात्र 1 प्रतिशत महिला प्रशिक्षणार्थी का शैंक्षणिक स्तर ही स्नातक या अधिक पाया गया । 72 प्रतिशत महिला कृषकों की शैक्षणिक योग्यता साक्षर से माध्यमिक स्तर तक पाई गयी ।

(4) प्रशिक्षण स्थल व पूर्व प्रशिक्षण का विवरण :–

सर्वेक्षण के द्वारा यह ज्ञात किया गया कि प्रशिक्षण देने का स्थान क्या था। शत प्रतिशत प्रशिक्षण किसी सरकारी संस्थान पर दिये गये या किसी ऐसे स्थान पर आयोजित किये गये जिसकी व्यवस्था विभाग द्वारा की गयी थी ।

प्रशिक्षण में यह भी ज्ञात किया गया कि क्या प्रशिक्षणार्थी द्वारा पूर्व में प्रशिक्षण प्राप्त किया गया है । प्राप्त जानकारी का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :–

क.सं.	खण्ड	सैम्पल साईज	प्रशिक्षण स्थान		पूर्व प्रशिक्षण का विवरण			
			सरकारी संस्थान	विभागीय स्थान व्यवस्था	एक दिवसीय कृषक	दो दिवसीय कृषक	महिला प्रशिक्षण	अन्य
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	जयपुर	54	12	42	3	0	1	0
2	भरतपुर	34	0	34	1	0	1	0
3	जोधपुर	54	6	48	0	0	3	0
4	उदयपुर	42	12	30	7	0	0	0
5	भीलवाडा	30	18	12	6	0	6	0
6	कोटा	54	12	42	2	0	1	2
7	श्रीगंगानगर	12	0	12	0	0	0	0
8	योग	280	60	220	19	0	12	2

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि कुल कृषक में से 33 कृषक (12 प्रतिशत) ऐसे पाये गये जो कि पूर्व में भी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे । इनमें से पूर्व में 19 कृषकों द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया गया था, 12 कृषकों द्वारा महिला प्रशिक्षण व दो कृषकों द्वारा अन्य प्रशिक्षण प्राप्त किये गये । 12 प्रतिशत कृषकों को पूर्व में प्रशिक्षण प्राप्त था, लेकिन विभागीय दिशा निर्देश की अनुपालना सुनिश्चित करते हुए पूर्व में प्रशिक्षण प्राप्त कृषकों का पुनः चयन करने की प्रवृति नहीं अपनायी जानी चाहिये ।

(5) प्रशिक्षण देने वाले अधिकारीः— कृषकों से यह जानकारी भी प्राप्त की गयी कि उनको प्रशिक्षण किस स्तर के अधिकारियों द्वारा दिया गया था । सर्वेक्षण के आधार पर विवरण निम्नानुसार है :—

	प्रशिक्षण देने वाले अधिकारी							
क्र.सं.	खण्ड	सेम्पल साईज	उप निदेशक	सहा. निदेशक	कृषि. अधिकारी	कृ.अनु. अधि.	स.कृ.अ.	कृषि पर्य.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	जयपुर	54	6	0	20	0	48	30
2	भरतपुर	34	4	14	23	0	28	27
3	जोधपुर	54	0	24	12	0	48	48
4	उदयपुर	42	0	12	12	6	42	42
5	भीलवाडा	30	0	6	12	12	24	30
6	कोटा	54	0	12	12	12	51	54
7	श्रीगंगानगर	12	0	6	0	12	0	12
8	**योग**	**280**	**10**	**74**	**91**	**42**	**241**	**243**

सर्वेक्षण से प्राप्त परिणामों के विश्लेषण से ज्ञात होता हे कि 280 प्रशिक्षणों में प्रशिक्षण देते समय प्रत्येक प्रशिक्षण में ओसतन 2—3 अधिकारी या कर्मचारी उपस्थित थे, जिनके द्वारा प्रशिक्षण कार्य सम्पादित किया गया। प्रशिक्षण देने के कार्य में सहायक कृषि अधिकारी व कृषि पर्यवेक्षक क्रमशः 86 एवं 87 प्रतिशत द्वारा प्रशिक्षण में भाग लिया गया । उप निदेशक कृषि द्वारा मात्र 4 प्रतिशत, सहायक निदेशक कृषि (विस्तार) द्वारा 11 प्रतिशत एवं कृषि अधिकारी द्वारा 32 प्रतिशत प्रशिक्षणों में सम्मिलित हुऐ ।

(6) अन्य विभाग के अधिकारियों / कर्मचारियों की प्रशिक्षण में उपस्थिति :—

सर्वेक्षण द्वारा यह भी ज्ञात किया गया कि क्या अन्य विभागों के अधिकारियों / कर्मचारियों द्वारा भी प्रशिक्षण में भाग लिया गया । प्राप्त सर्वेक्षण के आधार पर विवरण निम्नानुसार है :—

क्र. सं.	खण्ड	अन्य विभाग के अधिकारी / कर्मचारी की भागीदारी					
		सेम्पल साईज	महिला एवं बाल वि.	केवीके	उद्यान विभाग	पशुपालन	अन्य
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**
1	जयपुर	54	12	0	0	18	0
2	भरतपुर	34	0	12	4	0	0
3	जोधपुर	54	30	0	6	12	18
4	उदयपुर	42	14	6	0	14	18
5	भीलवाडा	30	18	0	0	6	12
6	कोटा	54	12	0	0	9	18
7	श्रीगंगानगर	12	12	0	0	0	6
8	**योग**	**280**	**98**	**18**	**10**	**59**	**72**

प्रशिक्षणार्थियों के अनुसार सर्वाधिक 35 प्रतिशत में महिला एवं बाल विकास विभाग, 21 प्रतिशत में पशुपालन विभाग के अधिकारी / कर्मचारियों की भागीदारी रही, जबकि कृषि विज्ञान केन्द्र व उधान विभाग के अधिकारियों / कर्मचारियों की भागीदारी क्रमशः 6 व 4 प्रतिशत में रही । इसके अतिरिक्त अन्य विभाग के अधिकारी / कर्मचारी की भागीदारी भी 26 प्रतिशत में रही ।

(7) प्रशिक्षण में भाग लेने बाबत समय व स्थान सूचना :–

कृषकों को प्रशिक्षण के समय व स्थान के बारे में सूचित कब किया गया यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न था इस बारे में प्राप्त सूचना का संक्षिप्त सार निम्न प्रकार है :–

क्र.सं.	खण्ड	समय व स्थान के बारे में कब बताया गया			
		सेम्पल साईज	एक दिवस पूर्व	सात दिवस पूर्व	सात दिवस से अधिक
1	2	3	4	5	6
1	जयपुर	54	15	26	13
2	भरतपुर	34	30	4	0
3	जोधपुर	54	28	26	0
4	उदयपुर	42	20	21	1
5	भीलवाडा	30	10	24	6
6	कोटा	54	20	22	12
7	श्रीगंगानगर	12	5	7	0
8	**योग**	**280**	**118**	**130**	**32**

सर्वेक्षण परिणाामों से ज्ञात होता हे कि 42 प्रतिशत कृषकों को प्रशिक्षण समय व स्थान के बारे में एक दिवस पूर्व ही सूचित किया गया । सर्वेक्षण के विश्लेषण आधार पर अनुसार 42 प्रतिशत कृषकों को प्रशिक्षण स्थल व दिनांक की सूचना एक दिवस पूर्व ही दी गयी। यह उचित रहेगा कि सम्बन्धित कृषि पर्यवेक्षक कम से कम एक सप्ताह पूर्व कृषकों को समय व दिनांक की जानकारी प्रदान करें ।

(8) प्रशिक्षण देने के तरीके के बारें में :–

प्रशिक्षण में दृश्य–श्रृव्य साधन, साहित्य व अन्य कार्यक्रम सर्वेक्षण द्वारा यह भी ज्ञात किया गया कि क्या प्रशिक्षण के दौरान दृश्य–श्रृव्य साधन काम में लिये गये, साहित्य बांटा गया प्रायोगिक ज्ञान दिया गया इत्यादि । प्राप्त आंकडों को निम्न तालिका में दर्शाया गया है :–

क्र.सं.	खण्ड	सेम्पल साईज	दृश्य श्रृव्य साधन	प्रशिक्षण साहित्य	प्रायोगिक ज्ञान दिया गया	प्रशिक्षणों को रोचक बनाने के लिये कोई कार्य लिया गया	समूह चर्चा की गई	ज्ञानार्जन टेस्ट लिया गया	यदि हां तो पुरस्कार बांटे गये
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	जयपुर	54	0	42	20	16	42	54	53
2	भरतपुर	34	4	32	0	7	19	29	29
3	जोधपुर	54	18	54	36	26	46	54	54
4	उदयपुर	42	0	35	15	15	36	38	28
5	भीलवाडा	30	18	30	24	24	30	30	30
6	कोटा	54	6	48	14	21	36	48	48
7	श्रीगंगानगर	12	0	12	12	0	12	12	12
	योग	**280**	**46**	**253**	**121**	**109**	**221**	**265**	**254**

(1) सर्वेक्षण विश्लेषण से ज्ञात होता है कि केवल 16 प्रतिशत प्रशिक्षणों में ही दृश्य–श्रृव्य साधनों का प्रयोग किया गया । जयपुर, उदयपुर व श्रीगंगानगर खण्डों में किसी भी प्रशिक्षण में दृश्य–श्रृव्य साधन का प्रयोग नहीं किया गया,, जबकि भीलवाडा खण्ड में 60 प्रतिशत प्रशिक्षणों में दृश्य–श्रृव्य साधनों का प्रयोग किया गया ।

(2) प्रशिक्षण साहित्य 90 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों में वितरित करना पाया गया । जोधपुर, भीलवाडा व श्रींगंगानगर शत–प्रतिशत प्रशिक्षणों में साहित्य वितरित किया गया, जबकि जयपुर खण्ड में सबसे कम 78 प्रतिशत प्रशिक्षणों में साहित्य वितरित हुआ।

(3) प्रायोगिक ज्ञान केवल 43 प्रतिशत प्रशिक्षणों में ही दिया गया तथा जोधपुर, जयपुर, उदयपुर, कोटा खण्डों में प्रशिक्षणों में प्रायोगिक ज्ञान कम दिया गया।

(4) प्रशिक्षणों को रोचक बनाने के लिये विभिन्न कार्यक्रम यथा खेल, गीत, कविता, कहानी, चुटकिले, कठपूतली व जादू आदि का आयोजन करने के निर्देश दिये गये थे । सर्वेक्षण आंकडों से ज्ञात होता है कि केवल 39 प्रतिशत प्रशिक्षणों में ही इन कार्यक्रमों को सम्मिलित किया गया । जयपुर, जोधपुर, उदयपुर व श्रीगंगानगर खण्डों में तो इन कार्यक्रमों को काफी कम प्रशिक्षणों में सम्मिलित किया गया ।

(5) 79 प्रतिशत प्रशिक्षणों में समूह चर्चा की गयी ।

(6) प्रशिक्षण समाप्ति पर 95 प्रतिशत प्रशिक्षणों में ज्ञानार्जन टेस्ट का आयोजन किया जाना पाया गया तथा इनमे से 91 प्रतिशत प्रशिक्षणों में पुरस्कार वितरित किये गये। ज्ञानार्जन टेस्ट का आयोजन भरतपुर, उदयपुर, व कोटा खण्डों में अपेक्षाकृत कम हुआ।

(9) प्रशिक्षण के दौरान तकनीकी ज्ञान की जानकारी एवं उसका उपयोग :–

सर्वेक्षण से प्राप्त परिणामों के विश्लेषण निम्नानुसार रहा :–

क्र. सं.	विषयों की जानकारी दी गयी	प्रशिक्षणार्थियों को विषय की जानकारी		प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्राप्त जानकारी का उपयोग		प्रशिक्षणार्थियों द्वारा जानकारी उपयोगी थी	
		संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	गर्मियो की जुताई	265	95	177	67	225	85
2.	नेडेप सुपर कम्पोस्ट बनाने की विधि	245	87	58	24	176	72
3.	वर्मी कम्पोस्ट	268	96	52	19	157	59
4.	बीज उपचार रसायन से	251	90	109	43	206	82
5.	बीज उपचार कल्चर से	247	88	78	32	200	81
6.	मृदा परीक्षण के आधार पर खाद व उर्वरक का प्रयोग	244	87	61	25	178	73
7.	जिप्सम का उपयोग	225	80	25	11	133	59
8.	वर्षा जल संरक्षण एवं शुष्क खेती	178	64	76	43	131	74
9-	फसलों की क्रान्तिक अवस्था पर सिंचाई	252	90	176	70	225	89
10.	फैरोमेन ट्रेप व प्रकाशपाश का उपयोग	125	45	10	8	78	62
11.	सुत्रकृमि प्रबन्धन	76	27	6	8	54	71
12.	आर्थिक क्षति स्तर जानने का तरीका व महत्व	95	34	41	23	66	69
13.	विभिन्ननाशी जीवो का प्रबन्धन	229	82	95	41	166	72
14.	जैविक तरीके से कीट/ व्याधि प्रबन्धन	193	69	71	37	153	79
15.	फार्म लेबिल ग्रेडिग	165	59	121	73	150	91
16.	फव्वारा सिंवाई से क्षेत्र में वृद्वि	257	92	52	20	147	57
17.	बूंद बूंद सिंचाई	183	65	6	3	118	64
18.	पो.सं. दवाओं के उपयोग के दौरान सावधानी	236	84	148	63	173	73

सर्वेक्षण विश्लेषण से ज्ञात होता है, जिन प्रशिक्षणों में प्रायः सभी महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी दी गयी । गर्मियों की जुताई के बारे में 95 प्रतिशत लाभान्वित प्रशिक्षणार्थियों ने बताया कि इस विषय पर प्रशिक्षण में जानकारी दी गयी तथा 85 प्रतिशत कृषक द्वारा दी गयी जानकारी को उपयोगी भी मानते है, फिर भी जानकारी का उपयोग केवल 67 प्रतिशत कृषकों द्वारा ही किया गया । नेडेप सुपर फास्फेट बनाने की विधि, वर्मी कम्पोस्ट, बीज उपचार, (रसायन से) बीज उपचार (कल्चर से) एवं फसलों की क्रान्तिक अवस्था में सिचांई क्रमशः 87 प्रतिशत, 96प्रतिशत, 90 प्रतिशत, 88 प्रतिशत, एवं 90 प्रतिशत कृषको को प्रशिक्षण में प्रदान की गयी । हांलाकि इन सभी विषयों के बारे में अधिकतर कृषकों को प्रदान की गई जानकारी को तो वे उपयोगी मानते है, परन्तु जिन कृषकों द्वारा जानकारी प्रयोग

में ली गयी उनका प्रतिशत अपेक्षाकृत कम पाया गया । उदाहरण के तोर पर वर्मी कम्पोस्ट के बारे में 96 प्रतिशत प्रशिणार्थी कृषकों ने बताया कि इस बारे में प्रशिक्षण में जानकारी दी गयी तथा इनमें से 59 प्रतिशत ने इसे उपयोगी भी माना, फिर भी इस जानकारी का उपयोग केवल 19 प्रतिशत कृषकों द्वारा ही किया गया । फैरोमेन ट्रेप व प्रकाशपाश का उपयोग, सुत्रकमि प्रबन्धन व आर्थिक क्षति जानने का तरीका व महत्व कुछ ऐसे विषय है, जिनके बारे में क्रमशः 45, 27, व 34 प्रतिशत कृषकों द्वारा ही बताया गया कि इन के बारे में भी प्रशिक्षण में जानकारी प्रदान की गयी थी । इसी प्रकार विभिन्ननाशी जीवों का प्रबन्धन, जैविक तरीके से कीट/व्याधि प्रबन्धन, फार्म लेविल ग्रेडिंग, फव्वारा सिंचाई से क्षेत्र में वृद्वि, बूंद बूंद सिंचाई एवं पौध संरक्षण दवाओं के उपयोग के दौरान सावधानी जेसे विषयों पर भी कृषकों को क्रमशः 82, 69, 59, 92, 65, 84 प्रतिशत, जानकारी प्रशिक्षण में दी गयी ।

10 :–क्या प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था :–

सर्वेक्षण द्वारा यह भी ज्ञात किया गया कि क्या प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था। खण्डवार स्थिति निम्नानुसार रही :–

क.सं.	खण्ड	सेम्पल साईज	क्या प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था		
			सामयिक	आंशिक सामयिक	सामयिक नहीं
1	2	3	4	5	6
1	जयपुर	54	54	0	0
2	भरतपुर	34	29	5	0
3	जोधपुर	54	47	7	0
4	उदयपुर	42	18	20	4
5	भीलवाडा	30	30	0	0
6	कोटा	54	40	10	4
7	श्रीगंगानगर	12	12	0	0
	योग	**280**	**230**	**42**	**8**

सर्वेक्षण विश्लेषण से ज्ञात होता हे कि 82 प्रतिशत लाभान्वित कृषकों की राय में प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था, 15 प्रतिशत द्वारा आंशिक एवं 3 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी की राय मे तकनीकी ज्ञान सामयिक नहीं पाया गया ।

द्वितीय अध्यायः— एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण

वर्ष 2005—06 में एक दिवसीय प्रशिक्षण के 264 के लक्ष्य के विरूद्व 269 प्राप्ति रही जो कुल लक्ष्य की 102 प्रतिशत रही । सर्वेक्षण हेतु 58 प्रशिक्षण का चयन कर कुल 348 लाभार्थीयों का सर्वेक्षण हेतु चयन किया गया, जिनमें से 343 लाभार्थी प्रशिक्षणार्थियों पर विशेष अध्ययन किया गया जो लक्ष्य का 99 प्रतिशत रहा जिलेवार प्रशिक्षण के लक्ष्य एवं प्राप्ति परिशिष्ठ 3 पर उपलब्ध है ।

(1) कृषकों की श्रेणीः—

सर्वेक्षण से प्राप्त परिणामों के आधार पर चयनित कृषकों का श्रेणीवार/खण्डवार वर्गीकरण निम्नानुसार रहा :—

क. सं.	खण्ड का नाम	सेम्पल साईज	सीमान्त	लधु	अन्य
1	2	3	4	5	6
1	जयपुर	66	19	29	18
2	भरतपुर	49	21	15	13
3	जोधपुर	72	14	25	33
4	उदयपुर	48	22	22	4
5	भीलवाडा	42	25	7	10
6	कोटा	54	60	20	20
7	श्रीगंगानगर	12	1	1	10
	योग	**343**	**116**	**119**	**108**

सर्वेक्षण परिणामों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 34 प्रतिशत सीमान्त कृषक, 35 प्रतिशत लधु कृषक एवं 31 प्रतिशत अन्य कृषकों का चयन किया गया । सर्वेक्षण विश्लेषण से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षण देने में चयन हेतु लधु व सीमान्त कृषकों का अधिक ध्यान रखा गया ।

<u>(2) कृषक वर्ग :—</u>

सर्वेक्षण द्वारा यह ज्ञात किया गया कि जिन कृषकों को प्रशिक्षण दिया गया है उनका जाति आधारित वर्गीकरण क्या है । सर्वेक्षण विश्लेषण के आधार पर निम्नानुसार रहा ।

क.सं.	खण्ड का नाम	सेम्पल साईज	सामान्य	ओ.बी.सी.	अ.जा.	अ.ज. जाति
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**
1	जयपुर	66	9	32	23	2
2	भरतपुर	49	5	19	15	10
3	जोधपुर	72	16	27	28	1
4	उदयपुर	48	1	3	1	43
5	भीलवाडा	42	9	15	18	0
6	कोटा	54	14	14	22	4
7	श्रीगंगानगर	12	0	11	1	0
	योग	**343**	**54**	**121**	**108**	**60**

सर्वेक्षण में चयनित लाभान्वितों में से सर्वाधिक संख्या अन्य पिछडा वर्ग के कृषकों की रही जो कि क्रमशः 35 प्रतिशत थी । इसका कारण प्रमुखतया यह है कि अन्य पिछडा वर्ग की सभी जातियों का प्रमुख पेशा कृषि ही रहा है । अनूसूचित जाति के चयनित लाभान्वित कृषकों का प्रतिशत 31, अनूसूचित जन जाति का प्रतिशत 17 रहा एवं सामान्य वर्ग के केवल 16 प्रतिशत कृषक ही लाभान्वित हुये ।

(3) शैक्षणिक स्तर :–सर्वेक्षण द्वारा लाभान्वित कृषकों के शैक्षणिक स्तर का भी अध्ययन किया गया । प्राप्त आंकडों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :–

क.सं.	खण्ड	सेम्पल साईज	निरक्षर	माध्यमिक तक शिक्षित	स्नातक या अधिक
1	2	3	4	5	6
1	जयपुर	66	9	53	4
2	भरतपुर	49	3	44	2
3	जोधपुर	72	8	62	2
4	उदयपुर	48	5	43	0
5	भीलवाडा	42	4	35	3
6	कोटा	54	5	45	4
7	श्रीगंगानगर	12	0	11	1
	योग	343	34	293	16

सर्वेक्षण परिणामों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 10 प्रतिशत लाभान्वित कृषक निरक्षर थे, जबकि मात्र 5 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी का शैक्षणिक स्तर ही स्नातक या अधिक पाया गया एवं 85 प्रतिशत कृषकों की शैक्षणिक योग्यता साक्षर से माध्यमिक स्तर तक की पाई गई ।

(4) प्रशिक्षण स्थल व पूर्व प्रशिक्षण का विवरण :–

सर्वेक्षण के द्वारा यह ज्ञात किया गया कि प्रशिक्षण देने का स्थान क्या था । शत–प्रतिशत प्रशिक्षण या तो किसी सरकारी संस्थान पर दिये गये या किसी ऐसे स्थान पर आयोजित किये गये, जिसकी व्यवस्था विभाग द्वारा की गयी थी।

प्रशिक्षण में यह भी जानकारी दी गई कि क्या प्रशिक्षणार्थीयों द्वारा पूर्व में प्रशिक्षण प्राप्त किया गया प्राप्त सर्वे परिणामों के विश्लेषण के आधार पर खण्डवार विवरण निम्नानुसार है :–

क.सं.	खण्ड	सैम्पल साइज	प्रशिक्षण स्थान		पूर्व प्रशिक्षण का विवरण			
			सरकारी संस्थान	विभागीय स्थान	एक दिवसीय	दो दिवसीय	महिला प्रशिक्षण	अन्य
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	जयपुर	66	18	48	4	0	0	0
2	भरतपुर	49	5	44	7	1	0	3
3	जोधपुर	72	18	54	6	0	0	0
4	उदयपुर	48	6	42	9	2	0	2
5	भीलवाडा	42	6	36	8	0	0	1
6	कोटा	54	24	30	1	6	0	4
7	श्रीगंगानगर	12	0	12	3	0	0	0
	योग	**343**	**77**	**266**	**38**	**9**	**0**	**10**

जिन 343 लाभान्वित कृषकों का सर्वेक्षण हेतु चयन किया गया था उनमें से 57 कृषक (17 प्रतिशत) ऐसे पाये गये जो कि पूर्व में भी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे । इनमें से पूर्व में 38 कृषकों द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया गया था, 9 कृषकों द्वारा दो दिवसीय तथा 10 कृषकों द्वारा अन्य प्रशिक्षण प्राप्त किये गये । हालांकि मात्र 17 प्रतिशत कृषकों को पूर्व में प्रशिक्षण प्राप्त था, लेकिन विभागीय दिशा निर्देशों की अनुपालना सुनिश्चित करते हुए पूर्व में प्रशिक्षण प्राप्त कृषकों का पुनः चयन करने की प्रवृति नहीं अपनाई जानी चाहिये ।

5. <u>प्रशिक्षण देने वाले अधिकारी</u>:—

कृषकों से यह जानकारी भी प्राप्त की गयी कि उनको प्रशिक्षण किस स्तर के अधिकारियों द्वारा दिया गया था । सर्वेक्षण आंकडों का विवरण निम्न प्रकार से है :—

क.स.	खण्ड	सेम्पल साईज	प्रशिक्षण देने वाले अधिकारी					
			उप निदेशक	सहा. निदेशक	कृ.अधि	कृ.अनु. अधि.	स.कृ. अ.	कृषि पर्य.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	जयपुर	66	6	12	30	0	54	60
2	भरतपुर	49	0	6	24	3	46	42
3	जोधपुर	72	0	18	18	0	70	72
4	उदयपुर	48	6	15	12	7	45	42
5	भीलवाडा	42	1	5	12	12	42	36
6	कोटा	54	0	6	6	6	51	54
7	श्रीगंगानगर	12	0	12	0	0	12	12
	योग	**343**	**13**	**74**	**102**	**28**	**320**	**318**

सर्वेक्षण के परिणामों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि प्रत्येक प्रशिक्षण में ओसतन 2–3 अधिकारी या कर्मचारी उपस्थित थे, जिनके द्वारा प्रशिक्षण कार्य सम्पादित किया गया, हालांकि प्रशिक्षण देने का कार्य 74 प्रतिशत मामलों में सहायक कृषि अधिकारी या कृषि पर्यवेक्षक द्वारा ही किया गया । उप निदेशक स्तर के अधिकारियों की उपस्थिति मात्र 2 प्रतिशत ही रही, सहायक निदेशक कृषि (विस्तार) की उपस्थिति 9 प्रतिशत एवं कृषि अधिकारी 12 प्रतिशत प्रशिक्षणों में सम्मिलित हुए ।

6. अन्य विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों की प्रशिक्षण में उपस्थिति :–

सर्वेक्षण द्वारा यह भी ज्ञात किया गया कि क्या अन्य विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा भी प्रशिक्षण में भाग लिया गया । प्राप्त आंकडों का विवरण निम्न प्रकार है :–

क.सं.	खण्ड	सेम्पल साईज	अन्य विभाग के अधिकारी/कर्मचारी की भागीदारी					
			महिला एवं बाल वि.	केवीके	उधान विभाग	पशुपालन	उधान विभाग	अन्य
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	जयपुर	66	0	2	13	30	13	11
2	भरतपुर	49	6	13	13	0	13	4
3	जोधपुर	72	6	0	6	12	6	30
4	उदयपुर	48	2	0	0	21	0	24
5	भीलवाडा	42	0	12	6	12	6	12
6	कोटा	54	0	0	0	9	0	9
7	श्रीगंगानगर	12	0	0	0	6	0	6
	योग	**343**	**14**	**27**	**38**	**90**	**38**	**96**

प्रशिक्षणार्थियों के अनुसार सर्वाधिक 28 प्रतिशत अन्य विभाग, 26 प्रतिशत पशु पालन विभाग के अधिकारी/कर्मचारियों की भागीदारी रही, उधान विभाग के 11 प्रतिशत, के.बी.के. के 9 प्रतिशत, एवं महिला एवं बाल विकास विभाग के 4 प्रतिशत अधिकारी/कर्मचारियों की भागीदारी रही ।

(7) प्रशिक्षण में भाग लेने बाबत समय व स्थान सूचना :–

कृषकों को प्रशिक्षण के समय व स्थान के बारे में सूचित कब किया गया यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न था इस बारे में प्राप्त सूचना का संक्षिप्त सार निम्न प्रकार है :–

कसं.	खण्ड	सेम्पल साईज	समय व स्थान के बारे में कब बताया गया		
			एक दिवस पूर्व	सात दिवस पूर्व	सात दिवस से अधिक
1	2	3	4	5	6
1	जयपुर	66	11	5	0
2	भरतपुर	49	22	22	5
3	जोधपुर	72	18	51	3
4	उदयपुर	48	15	32	1
5	भीलवाडा	42	13	29	0
6	कोटा	54	13	39	2
7	श्रीगंगानगर	12	3	8	1
	योग	**343**	**95**	**236**	**12**

सर्वेक्षण परिणामों से ज्ञात होता है कि 28 प्रतिशत कृषकों को प्रशिक्षण समय व स्थान के बारें में एक दिवस पूर्व ही सूचित किया गया । सर्वेक्षण आंकडों के अनुसार 69 प्रतिशत कृषकों को प्रशिक्षण समय एवं स्थान की जानकारी सात दिवस पूर्व दी गई तथा 3 प्रतिशत कृषकों सात दिवस से अधिक समय पूर्व दी गई ।

8 प्रशिक्षण देने के तरीके के बारे में:– प्रशिक्षण में दृश्य–श्रृव्य साधन, साहित्य व अन्य कार्यक्रम सर्वेक्षण द्वारा यह भी ज्ञात किया गया कि क्या प्रशिक्षण के दौरान दृश्य–श्रृव्य साधन, प्रायोगिक ज्ञान दिया गया इत्यादि । प्राप्त आंकडों को निम्न तालिका में बताया गया है :–

खण्ड	सेम्पल साईज	दृश्य श्रृव्य साधन	प्रशिक्षण साहित्य	प्रायोगिक ज्ञान दिया	प्रशिक्षणों को रोचक बनाने के लिये कोई कार्य लिया गया	समूह चर्चा की गई	ज्ञानार्जन टेस्ट लिया गया	यदि हां तो पुरस्कार बांटे गये
जयपुर	66	12	59	6	18	66	54	54
भरतपुर	49	14	49	0	14	34	49	49
जोधपुर	72	18	72	31	30	46	72	72
उदयपुर	48	6	48	30	24	42	45	31
भीलवाडा	42	12	18	12	24	36	30	30
कोटा	54	61	48	9	22	48	18	18
श्रीगंगानगर	12	0	12	12	0	12	12	12
योग	**343**	**68**	**306**	**100**	**132**	**284**	**280**	**268**

1. सर्वेक्षण आंकडों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि केवल 20 प्रतिशत प्रशिक्षणों में ही दृश्य–श्रृव्य साधनों का प्रयोग किया गया, जबकि भीलवाडा एवं भरतपुर खण्ड में 29 प्रतिशत प्रशिक्षणों में दृश्य–श्रृव्य साधनों का प्रयोग किया गया ।

2. प्रशिक्षण साहित्य 89 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी में वितरित करना पाया गया । भरतपुर, उदयपुर व श्रीगंगानगर शत–प्रतिशत प्रशिक्षणों में साहित्य वितरित किया गया, जबकि भीलवाडा खण्ड में सबसे कम 43 प्रतिशत प्रशिक्षणों में साहित्य वितरित हुआ ।

3. प्रायोगिक ज्ञान केवल 29 प्रतिशत प्रशिक्षणों में ही दिया गया तथा जयपुर, भरतपुर व कोटा खण्डों में तो इससे भी कम प्रशिक्षणों में प्रायोगिक ज्ञान दिया गया ।

4. प्रशिक्षणों को रोचक बनाने के लिये विभिन्न कार्यक्रम यथा खेल, गीत, कविता, कहानी, चुटकिले, कठपूतली व जादू आदि का आयोजन करने के निर्देश दिये गये थे । सर्वेक्षण आंकडों से ज्ञात होता है कि केवल 38 प्रतिशत प्रशिक्षणों में ही इन कार्यक्रमों को सम्मिलित किया गया । जयपुर, भरतपुर व श्रीगंगानगर खण्डों में तो इन कार्यक्रमों को काफी कम प्रशिक्षणों में सम्मिलित किया गया ।

5. 83 प्रतिशत प्रशिक्षणों में समूह चर्चा की गयी ।
6. प्रशिक्षण समाप्ति पर 82 प्रतिशत प्रशिक्षणों में ज्ञानार्जन टेस्ट का आयोजन किया जाना पाया गया तथा इनमे से 78 प्रतिशत प्रशिक्षणों में पुरस्कार वितरित किये गये । ज्ञानार्जन टेस्ट का आयोजन कोटा खण्डों में अपेक्षाकृत कम हुआ ।

9 प्रशिक्षण के दौरान तकनीकी ज्ञान की जानकारी एवं उसका उपयोग :–

सर्वेक्षण आंकडों का विवरण निम्न तालिका में दर्शाया है :–

क्र. सं.	विषयों की जानकारी दी गयी	प्रशिक्षणार्थियों को विषय की जानकारी		प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्राप्त जानकारी का उपयोग		प्रशिक्षणार्थियों द्वारा जानकारी उपयोगी थी	
		संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति
1	2	3		4	5	6	7
1.	गर्मियो की जुताई	323	94	203	63	305	94
2.	नेडेप सुपर फास्फैट बनाने की विधि	317	92	63	20	232	73
3.	वर्मी कम्पोस्ट	324	94	69	21	238	73
4.	बीज उपचार रसायन से	329	96	171	52	246	75
5.	बीज उपचार कल्चर से	328	96	140	43	249	76
6.	मृदा परीक्षण के आधार पर खाद व उर्वरक का प्रयोग	315	92	94	30	219	69
7.	जिप्सम का उपयोग	303	88	61	20	215	71
8.	वर्षा जल संरक्षण एवं सुक्ष्म खेती	200	58	107	53	144	72

क्र. सं.	विषयों की जानकारी दी गयी	प्रशिक्षणार्थियों को विषय की जानकारी		प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्राप्त जानकारी का उपयोग		प्रशिक्षणार्थियों द्वारा जानकारी उपयोगी थी	
		संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति
1	2	3		4	5	6	7
9.	फसलों की क्रतिक अवस्था पर सिंचाई	293	85	232	79	275	94
10	फैरोमेन ट्रेप व प्रकाशपाश का उपयोग	196	57	37	19	140	71
11	सुत्रक्रमि प्रबन्धन	88	26	7	8	41	47
12	आर्थिक क्षति स्तर जानने का तरीका व महत्व	142	41	65	46	96	68
13	विभिन्ननाशी जीवो का प्रबन्धन	265	77	144	54	211	80
14	जैविक तरीके से कीट/व्याधि प्रबन्धन	243	71	62	25	179	74
15	फार्म लेबिल ग्रेडिग	169	49	105	62	119	70
16	फव्वारा सिंवाई से क्षेत्र में वृद्धि	306	89	80	26	213	70
17	बूंद बूंद सिंचाई	196	57	13	7	119	61
18	पो.सं. दवाओं के उपयोग के दौरान सावधानी	306	89	201	66	245	80

सर्वेक्षण आंकडों से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षणों में प्रायः सभी महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी दी गयी । गर्मियों की जुताई के बारे में 94 प्रतिशत लाभान्वित प्रशिक्षणार्थियों ने बताया कि इस विषय पर प्रशिक्षण में जानकारी दी गयी तथा 94 प्रतिशत कृषकों द्वारा दी गयी जानकारी को उपयोगी भी मानते है । फिर भी इस जानकारी का उपयोग 63 प्रतिशत कृषकों द्वारा ही किया गया । इसके अतिरिक्त तालिका से स्पष्ट है कि नेडेप सुपर फास्फेट बनाने की विधि, वर्मी कम्पोस्ट, बीज उपचार, (रसायन), बीज उपचार (कल्चर) फसलों की क्रांतिक अवस्था में सिंचाई बूंद बूंद सिचाई इत्यादि विषयो पर 80–95 प्रतिशत कृषकों ने बताया की इनकी जानकारी प्रशिक्षण में प्रदान की गई, हांलाकि इन सभी विषयों के बारे में अधिकतर कृषक प्रदान की गई जानकारी को तो उपयोगी मानते है, परन्तु जिन कृषकों द्वारा जानकारी प्रयोग में ली गयी उनका प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है । उदाहरण के तोर पर वर्मी कम्पोस्ट के बारे में 94 प्रतिशत प्रशिणार्थी कृषकों ने बताया कि इस बारे में प्रशिक्षण में जानकारी दी गयी तथा इनमें से 69 प्रतिशत ने इसे उपयोगी भी माना, फिर भी इस जानकारी का उपयोग केवल 20 प्रतिशत कृषकों द्वारा ही किया गया । फैरोमेन ट्रेप व प्रकाशपाश का उपयोग सूत्रक्रमी प्रबन्धन व आर्थिक क्षति जानने का तरीका व महत्व कुछ ऐसे विषय है, जिनके बारे में क्रमशः 57 प्रतिशत, 26 प्रतिशत व 41 प्रतिशत कृषकों द्वारा ही बताया गया है कि इन के बारे में भी प्रशिक्षण में जानकारी प्रदान की गयी थी । गर्मियों की जुताई फसलों की क्रान्तिक अवस्था पर सिंचाई व पौध संरक्षण दवाओं के उपयोग के दौरान सावधानी बरतने जैसे विषय में ही सर्वाधिक कृषकों द्वारा प्राप्त जानकारी का उपयोग किया गया ।

10. क्या प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था :—

सर्वेक्षण द्वारा यह भी ज्ञात किया गया कि क्या प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था। सर्वेक्षण आंकडों को निम्न तालिका में दर्शाया गया है :

क.सं.	सैम्पल साईज	क्या प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था		
		सामयिक	आंशिक सामयिक	सामयिक नहीं
1	2	3	4	5
जयपुर	66	60	6	0
भरतपुर	49	40	9	0
जोधपुर	72	42	30	0
उदयपुर	48	9	39	0
भीलवाडा	42	42	0	0
कोटा	54	49	5	0
श्रीगंगानगर	12	12	0	0
योग	**343**	**254**	**89**	**0**

सर्वेक्षण विश्लेषण से ज्ञात होता हे कि 74 प्रतिशत लाभान्वित कृषकों की राय में प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था, 26 प्रतिशत की राय में तकनकी ज्ञान आंशिक रूप से सामयिक था ।

तृतीय अध्यायः– दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण

वर्ष 2005–06 में दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण में 737 लक्ष्य के विरूद्व 586 प्राप्ति रही जो कुल लक्ष्य का 79 प्रतिशत है । सर्वेक्षण हेतु 115 प्रशिक्षणों का चयन कर कुल 690 लाभार्थी कृषकों के लक्ष्य के विरूद्व सर्वेक्षण हेतु 665 लाभार्थियों का चयन किया गया, जो कि लक्ष्य का 96 प्रतिशत है । जिलेवार दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण लक्ष्य एवं प्राप्ति परिशिष्ठ 4 पर उपलब्ध है ।

1. कृषकों की श्रेणीः–

सर्वेक्षण के आधार पर चयनित कृषकों का श्रेणीवार/खण्डवार वर्गीकरण निम्नानुसार रहा :–

क.सं.	खण्ड का नाम	सेम्पल साईज	सीमान्त	लघु	अन्य
1	2	3	4	5	6
1.	जयपुर	92	28	56	8
2.	भरतपुर	113	52	40	21
3.	जोधपुर	138	23	70	45
4.	उदयपुर	92	41	51	0
5.	भीलवाडा	89	27	44	18
6.	कोटा	129	27	67	35
7.	श्रीगंगानगर	12	0	5	7
	योग	**665**	**198**	**333**	**134**

दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम में लाभान्वित लधु 50 प्रतिशत, सीमान्त 30 प्रतिशत तथा अन्य 20 प्रतिशत रहे । सर्वेक्षण आंकडों से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षण देने में चयन हेतु लधु एवं सीमान्त कृषकों का अधिक ध्यान रखा गया ।

2. कृषक वर्ग :–

सर्वेक्षण द्वारा यह ज्ञात किया गया कि जिन कृषकों को प्रशिक्षण दिया गया है उनका जाति आधारित वर्गीकरण क्या हे । सर्वेक्षण परिणामों के आधार पर खण्डवार स्थिति निम्नानुसार है :–

क.सं.	खण्ड	सेम्पल साईज	सामान्य	ओबीसी	एससी	एसटी
1	2	3	4	5	6	7
1	जयपुर	92	15	33	32	12
2	भरतपुर	113	24	37	27	25
3	जोधपुर	138	29	45	52	12
4	उदयपुर	92	9	0	1	82
5	भीलवाडा	89	14	51	24	0
6	कोटा	129	19	47	52	11
7	श्रीगंगानगर	12	0	6	6	0
	योग	**665**	**110**	**219**	**194**	**142**

सर्वेक्षण में चयनित लाभान्वितों में से सर्वाधिक संख्या अन्य पिछडा वर्ग के कृषकों की रही हें जो 34 प्रतिशत थी इसका कारण प्रमुखतया यह है कि अन्य पिछडा वर्ग की सभी जातियों का प्रमुख पेशा कृषि ही रहा है । अनूसूचित जाति के चयनित लाभान्वित कृषकों का प्रतिशत 28 रहा अनूसूचित जन जाति का प्रतिशत 21 रहा एवं सामान्य वर्ग के केवल 17 प्रतिशत कृषक ही लाभान्वित हुए ।

3. **शैक्षणिक स्तर** :– लाभान्वित कृषकों के शैक्षणिक स्तर का भी अध्ययन किया गया । प्राप्त सर्वे परिणामों के आधार पर खण्डवार निम्नानुसार हैः–

क.सं.	खण्ड	सेम्पल साईज	निरक्षर	माध्यमिक तक शिक्षित	स्नातक या अधिक
1	2	3	4	5	6
1	जयपुर	92	14	73	5
2	भरतपुर	113	1	101	11
3	जोधपुर	138	24	113	1
4	उदयपुर	92	7	84	1
5	भीलवाडा	89	5	82	2
6	कोटा	129	8	108	13
7	श्रीगंगानगर	12	1	11	0
	योग	665	60	572	33

सर्वेक्षण परिणामों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 9 प्रतिशत लाभान्वित कृषक निरक्षर थे, जबकि मात्र 5 प्रतिशत प्रशिक्षाणार्थी का शैक्षणिक स्तर ही स्नातक या अधिक पाया गया । 72 प्रतिशत महिला कृषकों की शैक्षणिक योग्यता साक्षर से माध्यमिक स्तर तक की पाई गई ।

4. प्रशिक्षण स्थल व पूर्व प्रशिक्षण का विवरण :–

सर्वेक्षण के द्वारा यह ज्ञात किया गया कि प्रशिक्षण देने का स्थान क्या था । शत–प्रतिशत प्रशिक्षण या तो किसी सरकारी संस्थान पर दिये गये या किसी ऐसे स्थान पर आयोजित किये गये, जिसकी व्यवस्था विभाग द्वारा की गयी थी। प्रशिक्षण में यह भी ज्ञात किया गया कि क्या प्रशिक्षणार्थीयों द्वारा पूर्व में प्रशिक्षण प्राप्त किया गया है। प्राप्त जानकारी का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :–

क्र. सं.	खण्ड	सैम्पल साइज	प्रशिक्षण स्थान		पूर्व प्रशिक्षण का विवरण			
			सरकारी संस्थान	विभागीय स्थान	एक दिवसीय	दो दिवसीय	महिला प्रशिक्षण	अन्य
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	जयपुर	92	69	30	9	0	0	3
2	भरतपुर	113	61	52	9	7	0	2
3	जोधपुर	138	36	102	13	6	0	1
4	उदयपुर	92	53	39	11	13	0	5
5	भीलवाडा	89	54	35	13	39	0	0
6	कोटा	129	23	106	11	20	0	20
7	श्रीगंगानगर	12	6	6	7	0	0	0
	योग	**665**	**295**	**370**	**73**	**85**	**0**	**31**

जिन 665 लाभान्वित कृषकों का सर्वेक्षण हेतु चयन किया गया था उनमें से 189 कृषक (28 प्रतिशत) ऐसे पाये गये जो कि पूर्व में भी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे । इनमें से पूर्व में 73 कृषकों द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण, 85 कृषकों द्वारा दो दिवसीय प्रशिक्षण एवं 31 कृषकों द्वारा अन्य प्रशिक्षण प्राप्त किये गये । अतः विभागीय दिशा निर्देशों की अनुपालना सुनिश्चित करते हुए पूर्व में प्रशिक्षण प्राप्त कृषकों का पुनः चयन करने की प्रवृति नहीं अपनाई जानी चाहिये ।

<u>5. प्रशिक्षण देने वाले अधिकारी</u>:— कृषकों से यह जानकारी भी प्राप्त की गयी कि उनको प्रशिक्षण किस स्तर के अधिकारियों द्वारा दिया गया था । विश्लेषण निम्न प्रकार से है :—

क्र. सं.	खण्ड	सैम्पल साईज	प्रशिक्षण देने वाले अधिकारी					
			उप निदे.	सहा. निदे.	कृ. अधि.	.कृ.अनु. अधि.	स.कृ.अ.	कृषि पर्य.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	जयपुर	92	12	17	74	34	64	58
2	भरतपुर	113	11	78	68	30	98	80
3	जोधपुर	138	29	72	67	30	130	135
4	उदयपुर	92	0	16	0	6	45	49
5	भीलवाडा	89	12	46	45	33	70	71
6	कोटा	129	0	42	50	14	111	120
7	श्रीगंगानगर	12	0	12	0	6	6	12
	योग	**665**	**64**	**283**	**304**	**153**	**524**	**525**

सर्वेक्षण विश्लेषण से प्राप्त आंकडों से ज्ञात होता है कि 665 प्रशिक्षणों को प्रशिक्षण देते समय 10 प्रतिशत उप निदेशक कृषि(विस्तार), 42 प्रतिशत सहायक निदेशक कृषि(विस्तार), 46 प्रतिशत कृषि अधिकारी, 23 प्रतिशत कृषि अनुंसधान अधिकारी, 79 सहायक कृषि अधिकारी एवं 79 प्रतिशत कृषि पर्यवेक्षक उपस्थित रहे । इस प्रकार सर्वाधिक प्रतिशत सहायक कृषि अधिकारी एवं कृषि पर्यवेक्षकों का रहा ।

6. अन्य विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों की प्रशिक्षण में उपस्थिति :–

सर्वेक्षण द्वारा यह भी ज्ञात किया गया कि क्या अन्य विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा भी प्रशिक्षण में भाग लिया गया । प्राप्त आंकडों का विवरण निम्न प्रकार है :–

क्र. सं.	खण्ड	सैम्पल साईज	अन्य विभाग के अधिकारी/कर्मचारी की भागीदारी				
			महिला एवं बाल विकास विभाग	केवीके	उधान विभाग	पशुपालन	अन्य
1	2	3	4	5	6	7	8
1	जयपुर	92	0	27	17	24	22
2	भरतपुर	113	7	63	53	35	16
3	जोधपुर	138	24	36	32	48	37
4	उदयपुर	92	2	35	0	26	24
5	भीलवाडा	89	0	30	42	42	24
6	कोटा	129	6	24	18	60	54
7	श्रीगंगानगर	12	0	6	0	0	0
	योग	665	39	221	162	235	177

सर्वेक्षण आंकडो से ज्ञात होता है कि 665 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण देते समय पशु पालन विभाग के अधिकारियों का प्रतिशत 35, के.बी.के. के अधिकारियों का 33 प्रतिशत, उधान विभाग का 24 प्रतिशत, महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारी 6 प्रतिशत तथा अन्य विभागों के अधिकारियों की भागीदारी 3 प्रतिशत रही ।

7. प्रशिक्षण में भाग लेने बाबत समय व स्थान की सूचना :–

कृषकों को प्रशिक्षण के समय व स्थान के बारे में सूचित कब किया गया यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न था इस बारे में प्राप्त सूचना का संक्षिप्त सार निम्न प्रकार है :–

क.सं.	खण्ड	सैम्पल साईज	समय व स्थान के बारे में कब बताया गया		
			एक दिवस पूर्व	सात दिवस पूर्व	सात दिवस से अधिक
1	2	3	4	5	6
1	जयपुर	92	18	44	30
2	भरतपुर	113	41	58	14
3	जोधपुर	138	42	94	2
4	उदयपुर	92	18	66	8
5	भीलवाडा	89	19	63	7
6	कोटा	129	58	71	0
7	श्रीगंगानगर	12	1	5	6
	योग	**665**	**197**	**401**	**67**

सर्वेक्षण आंकडों के अनुसार 30 प्रतिशत कृषकों को प्रशिक्षण स्थल व दिनांक की सूचना एक दिवस पूर्व ही प्रदान की गयी ।

8. **प्रशिक्षण देने के तरीके के बारे में** :– प्रशिक्षण में दृश्य–श्रृव्य साधन, साहित्य व अन्य कार्यक्रम सर्वेक्षण द्वारा यह भी ज्ञात किया गया कि क्या प्रशिक्षण के दौरान दृश्य–श्रृव्य साधन काम में लिये गये गये, साहित्य बांटा गया, प्रायोगिक ज्ञान दिया गया इत्यादि । सर्वेक्षण विश्लेषण के आधार पर खण्डवार स्थिति निम्नानुसार रही :–

खण्ड	सेम्पल साईज	दृश्य श्रृव्य साधन	प्रशिक्षण साहित्य	प्रायोगिक ज्ञान दिया	प्रशिक्षणों को रोचक बनाने के लिये कोई कार्यक्रम आयोजित किया गया	समूह चर्चा की गई	ज्ञानार्जन टेस्ट लिया गया	यदि हां तो पुरस्कार बांटे गये
जयपुर	92	17	92	35	39	63	86	86
भरतपुर	113	8	106	8	28	66	112	112
जोधपुर	138	102	137	84	86	105	135	131
उदयपुर	92	30	77	44	6	83	77	72
भीलवाडा	89	41	89	40	73	86	89	77
कोटा	129	6	116	31	55	100	114	126
श्रीगंगानगर	12	6	12	6	0	12	12	12
योग	**665**	**210**	**629**	**248**	**287**	**515**	**625**	**616**

(1) सर्वेक्षण आंकडों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि केवल 32 प्रतिशत प्रशिक्षणों में दृश्य–श्रृव्य साधनों का प्रयोग किया गया । जोधपुर खण्ड में सर्वाधिक 74 प्रतिशत एवं कोटा खण्ड में कम से कम 5 प्रतिशत दृश्य एवं श्रव्य साधनों का प्रयोग किया गया ।

(2) प्रशिक्षण साहित्य 95 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी में वितरित करना पाया गया जयपुर, जोधपुर, श्रीगंगानगर, भरतपुर खण्डों में लगभग शत–प्रतिशत साहित्य वितरण करना पाया गया ।

(3) प्रायोगिक ज्ञान केवल 37 प्रतिशत प्रशिक्षणों में ही दिया गया ।

(4) प्रशिक्षणों को रोचक बनाने के लिये विभिन्न कार्यक्रम यथा खेल, गीत, कविता, कहानी, चूटकूलें, कठपूतली व जादू आदि का आयोजन करने के निर्देश दिये गये थे । सर्वेक्षण आंकडों से ज्ञात होता है कि केवल 43 प्रतिशत प्रशिक्षणों में ही इन कार्यक्रमों को सम्मिलित किया गया ।

(5) 77 प्रतिशत प्रशिक्षणों में समूह चर्चा की गयी ।

(6) प्रशिक्षण समाप्ति पर 94 प्रतिशत प्रशिक्षणों में ज्ञानार्जन टेस्ट का आयोजन किया जाना पाया गया तथा इनमे से 93 प्रतिशत प्रशिक्षणों में पुरस्कार वितरित किये गये।

9. प्रशिक्षण के दौरान तकनीकी ज्ञान की जानकारी एवं उसका उपयोग :–

सर्वेक्षण आंकडों का विवरण निम्न तालिका में दर्शाया है :–

क. सं.	विषयों की जानकारी दी गयी	प्रशिक्षणार्थियों को विषय की जानकारी		प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्राप्त जानकारी का उपयोग		प्रशिक्षणार्थियों द्वारा जानकारी उपयोगी थी	
		संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	गर्मियो की जुताई	645	97	407	63	586	91
2.	नेडेप सुपर कम्पोस्ट बनाने की विधि	611	92	133	22	449	73
3.	वर्मी कम्पोस्ट	656	99	145	22	455	69
4.	बीज उपचार रसायन से	634	95	342	54	535	84
5.	बीज उपचार कल्चर से	651	98	273	42	491	75
6.	मृदा परीक्षण के आधार पर खाद व उर्वरक का प्रयोग	641	96	245	38	484	75
7.	जिप्सम का उपयोग	632	95	130	21	440	70
8.	वर्षा जल संरक्षण एवं शुष्क खेती	526	79	246	47	360	68
9.	फसलों की क्रान्तिक अवस्था पर सिंचाई	617	93	485	79	556	90
10	फैरोमेन ट्रेप व प्रकाशपाश का उपयोग	406	61	54	13	298	73
11	सुत्रक्रमि प्रबन्धन	253	38	92	36	181	71
12	आर्थिक क्षति स्तर जानने का तरीका व महत्व (ई.टी.एल.)	297	45	94	32	175	59
13	विभिन्ननाशी जीवो का प्रबन्धन	564	85	283	50	416	74

क्र. सं.	विषयों की जानकारी दी गयी	प्रशिक्षणार्थियों को विषय की जानकारी		प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्राप्त जानकारी का उपयोग		प्रशिक्षणार्थियों द्वारा जानकारी उपयोगी थी	
		संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति
1	2	3	4	5	6	7	8
14	जैविक तरीके से कीट/व्याधि प्रबन्धन	518	78	134	26	335	65
15	फार्म लेबिल ग्रेडिग	317	48	229	72	298	94
16	फव्वारा सिंवाई से क्षेत्र में वृद्धि	637	96	146	23	451	71
17	बूद बूद सिंचाई	505	76	40	8	338	67
18	पो.सं. दवाओं के उपयोग के दौरान सावधानी	614	92	429	70	520	85

सर्वेक्षण आंकडों से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षणों में प्रायः सभी महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी दी गयी । गर्मियों की जुताई के बारे में 97 प्रतिशत लाभान्वित प्रशिक्षणार्थियों ने बताया कि इस विषय पर प्रशिक्षण में जानकारी दी गयी तथा 91 प्रतिशत कृषक दी गयी जानकारी को उपयोगी भी मानते है । फिर भी इस जानकारी का उपयोग 63 प्रतिशत कृषकों द्वारा ही किया गया । इसके अतिरिक्त तालिका से स्पष्ट है कि नेडेप सुपर फास्फेट बनाने की विधि, वर्मी कम्पोस्ट, बीज उपचार, (रसायन से), बीज उपचार (कल्चर से), फसलों की क्रान्तिक अवस्था में सिचांई इत्यादि विषयो पर क्रमंशः 92, 99, 95, 98, 93 प्रतिशत कृषकों ने बताया की इनकी जानकारी प्रशिक्षण में प्रदान की गई, हांलाकि इन सभी विषयों के बारे में अधिकतर कृषक प्रदान की गई जानकारी को तो उपयोगी मानते है, परन्तु जिन कृषकों द्वारा जानकारी प्रयोग में ली गयी उनका प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है । उदाहरण के तोर पर वर्मी कम्पोस्ट के बारे में 99 प्रतिशत प्रशिणार्थी कृषकों ने बताया कि इस बारे में प्रशिक्षण में जानकारी दी गयी तथा इनमें से 69 प्रतिशत ने इसे उपयोगी भी माना, फिर भी इस जानकारी का उपयोग केवल 22 प्रतिशत कृषकों द्वारा ही किया गया। फैरोमेन ट्रेप व प्रकाशपाश का उपयोग सूत्रक्रमी प्रबन्धन व आर्थिक क्षति जानने का तरीका व महत्व कुछ ऐसे विषय है, जिनके बारे में क्रमशः 93 प्रतिशत, 38 प्रतिशत व 45 प्रतिशत कृषकों द्वारा ही बताया गया है कि इन के बारे में भी प्रशिक्षण में जानकारी प्रदान की गयी थी । गर्मियों की जुताई व फसलों की क्रतिक अवस्था में सिंचाई, वर्मी कम्पोस्ट एवं बीज उपचार ही ऐसे विषय थे, जिनकी जानकारी 95–99 प्रतिशत प्रशिक्षणों में दी गई । इस जानकारी को अधिकतर कृषकों ने उपयोगी माना तथा इसे अपनाया भी गया जो कि अन्य विषयों की अपेक्षाकृत अधिक था ।

(10) क्या प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था :–

सर्वेक्षण द्वारा यह भी ज्ञात किया गया कि क्या प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था। सर्वेक्षण आंकडों को निम्न तालिका में दर्शाया गया है :–

क.सं.	खण्ड	सैम्पल साईज	क्या प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था		
			सामयिक	आंशिक सामयिक	सामयिक नहीं
1	2	3	4	5	6
1	जयपुर	92	74	18	0
2	भरतपुर	113	100	13	0
3	जोधपुर	138	111	27	0
4	उदयपुर	92	52	39	1
5	भीलवाडा	89	87	2	0
6	कोटा	129	94	34	1
7	श्रीगंगानगर	12	12	0	0
	योग	**665**	**530**	**133**	**2**

सर्वेक्षण आंकडों से ज्ञात होता है कि 80 प्रतिशत लाभान्वित कृषकों की राय में प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था 19 प्रतिशत कृषकों के द्वारा तकनीकी ज्ञान आंशिक रूप से सामयिक बताया गया, जबकि 1 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों की राय में तकनीकी ज्ञान सामयिक नहीं है। सर्वेक्षण आंकडों से ज्ञात होता हे कि प्रशिक्षण में दिया जाने वाला तकनीकी ज्ञान सामयिक विषयों पर ही आधारित होता है । उदयपुर खण्ड में केवल 57 प्रतिशत कृषकों की राय थी की दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था ।

सर्वेक्षण आंकडों से ज्ञात होता है कि 77 प्रतिशत लाभान्वित कृषकों की राय में प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान सामयिक था तथा शेष 23 प्रतिशत द्वारा बताया गया कि प्रशिक्षण में दिया गया तकनीकी ज्ञान आंशिक समसामयिक था ।

गुणवत्तापूर्ण व उद्देश्य परक प्रभावी प्रशिक्षण कृषकों को नवीनतम तकनीकी ज्ञान प्रदान करने का सशक्त माध्यम तो है ही, इसके अतिरिक्त इनसे कृषकों की समस्या समाधान कर उत्पादन बढोतरी सुनिश्चित की जा सकती है । प्रशिक्षणों को ओर अधिक प्रभावी, समसामयिक व आवश्यकता अधारित बनाये जाने पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है ।